

श्रीः
शिवदत्तकृतं

पारिजात-नाटकम्

(सूत्रधार कथित-मञ्जुलगीतम् -)

देखि शुम्भ-निशुम्भ अतिबल,
देव मुनिगण चरण सेवल,
भेल परसनि^१ सेवक-दाहिनि, सिंहवाहिनि हे ।
आए आदिकुमारि माता,
सबहि कारज सिद्धिदाता,
विन्ध्य जाए निवास-कारिणि, ^२अरिसंहारिणि हे ॥
असुर^३ सुप्रिय देखि रूपा,
कहहि शुम्भ-निशुम्भ भुपा,
कोटि^४ शशि-सुरसम सुरूपा, अतिअतूपा हे ॥
धूम्रलोचन वीर जानी
जाए कहिय [इ] मधुर वानी,
करब घर सरदार रानी, जाए आनी हे ॥
दूत^५ शुम्भ-निशुम्भ-प्रेषित,
कहए लागल वचन अतिहित,
होअह जाय त्रिपुररानी, चलि भवानी हे ॥
धूम्रलोचन कोव कए मन,
आहु एकडए चलित तहि^६ छन,
[लेहि] हुंकार सुनए दीन्हो, भस्म कीन्हो हे ॥

१—असन्ना । २—शत्रु के सारनिहारि । ३—सुप्रीव नामक असुर अर्थात् रूप देखि
राजा शुम्भके कहलक । ४—कड़ीरो चन्द्र ओ सूर्यक समान । ५—शुम्भ-निशुम्भ-
द्वारा पठाओल दूत । ६—‘हित घन’—मूलपाठ ।

कालिके विस्तारवदना,
 अति भयानक विकट-दशना^१.
 सोमए चञ्चल परम^२ रसना, सखे-समाना हे ॥
 लम्बितोदर गुण्डमालिनि,
 चण्ड-मुण्ड विधोषकारिणि,
 कालिके कर खड्गधारिणि, औरमारिणि हे ॥
 रतबीज विशाल अतिव^३,
 आए बेरल अम्बिके दल,
 विह्वैलि दुर्गे ! हँसहि पल-पल, देखि^४ अरिदल हे ॥
 विविध अति स्वरूप धारिणि
 रतबीज शरीर दारिणि^५,
 सकल सरकुल कुशल कारिणि, ^६दुरित-दारिणि हे ॥
^७समर सम्म-निशुम्भ खड्गिनि,
 सकल गति गिरिराज-नन्दिनि,
 असुर मारिणि देवशान्दिनि, अरितकान्दिनि हे ॥
 कृपा करिअ महे श-रानी,
 जान नहि तुअ गति बखानी,
 शिवदत्त इहो उचर बानी जय जय भवानी हे ॥१॥

(ततो नटी प्रवेशिका-गीतं गावति—)

^१पूरन-शशि सम कला पसारि । कएल गमन गजगामिनि नारि ॥
 हेरइते^२ वदन परम अभिराम^३ । मुनिहुँ क मन धुनि बाइल काम ॥
^४रङ्गभूमि निअ मन अवधारि । बीसल लवे^५ निशाकर^६ हारि ॥

७—विकराल दंतवाली । ८—जोहा । राता—मूलपाठ । ९—समक समन
 कयनिहारि । सखे समाना — मूलपाठ । १०—शत्रु गण । ११—शिरनिहारि ।
 १२—पापनाशिका । १३—मुद्र मे । १४—गुणचन्द्रक समान । १५—सुन्दर ।
 १६—रत्नबंध १७—अन्दमान ।

देखइते^१ जगत रहल नहि धीरे । सभ मन बाइल श्मशानमध-पीरे ॥
 मन अवधारि रसिक रस जान । मन गुनि शिवदत्त एहो पद भान ॥१॥

(अथ नटी प्रति सूत्रधार कथित-श्लोकः—)

१६समानुरञ्जनाश्रयि कृतं नित्येन एव च ।

परिपूर्णाया तस्यैव साहित्वं कुरुष्व मम ॥१॥

(ततो^२ नटी कृतकृत्यं करवाणीति^३ कथयति । ततः सखी प्रति नटी
 गीतेन कथयति—)

परम सुदिन दिन मोर सखि ! भेला । हरण हसित पहु दरसन देला ॥
 विह्वैलि-विह्वैलि मोर कहूँ नहि बानी । नृत्य करिअ परिपूरित आनी ॥
 सभए सखी मिलि-जुलि चलि जाउ । पहु मन धन अति मोद बढ़ाउ ॥
 मुनि मुनि सकल सखी मन मान । मन गुनि शिवदत्त एहो पद भान ॥१॥

(अथ कृष्णादि-प्रवेश-सूचना-गीतम्—)

माधव मनसिज^१ गहड सवारे । देव^२ पुरन्दर सहित कुमारे ॥
 हनुमनि सखी-सहित चलि आवे । सतभामा देखि मान जनावे ॥
 उदक नारद-मुनि परवेसा । ऐरावत अतिसुन्दर गजेसा ॥
 शिवदत्त हरि हरथु कलेसा । एहि नाटक एतदा परवेसा ॥४॥

(अथ स्वतः श्रीकृष्ण-प्रवेशिका-गीतम्—)

माथे मुकुट, तिलक धनमाले । पीत-वसन तन मदनगोपाले ॥
 कुञ्जभवन माधव परवेसा । सूरति वशाम मनोहर भेसा ॥
 परम सोहाओन नव-नव फल । उदक संग हरि बूलल बूल ॥
 मन-मन गुनि शिवदत्त पद भान । रसिक गोपाल सभे रस जान ॥५॥

१५—कामधेयमा । १६—सभाक मनोरञ्जनक हेतु ओ दैनिक कृत्य भेलाक
 कारण^३ तकरे (नाट्य-कलाक) पूर्णताक हेतु अहाँ हमर सहयोग करत छौ ॥१॥
 २०—तखन नटी कृतकृत्य (धन्य) होइत 'करत छौ'-ई कहैत छथि । तखन नटी गीत
 द्वारा कहैत छथि । २१—कामधेय । २२—इन्द्र ।

(अथ रुक्मिणी-प्रवेशिका-गीतं गायति--)

सुन्दर परम मगन छल धेस । एहि अवसर रुकुमिनि परवेस ॥
गजगामिनि कामिनि कत साथ । मिलि जुलि चललि कान्हू दए हाथ ॥
चलइते पगु नेपुर घहराए । रुनुशुनु बिछिया सबद सुनाए ॥
कटि किङ्किणि नेपुर भल बाज । गाव मधुर धुनि मञ्जल आज ॥
आइलि सखिगन बहुत समाज । देखल कमल-नयन ब्रजराज ॥
श्रीवदता भन सुमरि भवानि । शरण देहु शरणागत जानि ॥६॥

(अथ सखीं प्रति रुक्मिणी-कथित-गीतम्--)

आएल देखल हम ओ ओ रे, [चल] गेल,
प्रेमक नेम^{२३} बेकत भेल ॥
देखि हरष हिथ ओ ओ रे, बेधल
नेह^{२४} लता असेधल ॥
एहि विधि बान्हल ओ ओ रे, मोर मन,
छोलि सकत नहि बहुजन ॥
शिवदत्ता कवि ओ ओ रे, पद भन,
^{२५} तोरित पुरह हथि मोर मन ॥७॥

(अथ रासगीतं गायति -)

फुलल सेउंति^{२६} चमेलि माधवि, बेलि कुश्व नेवारि ओ ।
लेकति रुकुमिनि कृष्णके संग, गेन गेनहि मारि ओ ॥
बाहु बाज मरज्ज सुन्दर, बांसुरी कठताल ओ ।
कएल हरजित सकल सखिगन, नाचि नाचि गोपाल ओ ॥
केलि सभ मन मगन भए गेलि, करए हरष हुलास ओ ।
... .. ॥

नारि लए लए कोर भए गेल कृष्ण पुरन-चन्द ओ ।
शिवदत्त भन चरन मन दए, मेठहु दाहन दन्द^{२७} ओ ॥८॥

२३ अङ्गुर न्यात भेल । २४ - हनेहुक लत्ती मे कसिकय बान्हल । २५ - शीघ्र ।

(अथ बाङ्गा-गीतम्--)

कुञ्जभवन कर रास मुरारि । हरखलि सकल जतेक छलि नारि ॥
एक बेरि सभ मिलि जपर निहार । अचरज देखि देखि मनहि विचार ॥
कीदहु पावक ? - गगन विराज । कीदहु उगल दोसर रवि २६ आज ॥
तखन बुझाए कहल भगवान । नारद पे^{२७} थिक एहु परमान ॥
ब्रह्मसेन दुति ३० जितए हुतासे ३१ । रविसभ दोसर देखिअ अकासे ॥
से मुनि सबी सकल मन मान । मन गुनि शिवदत्त एही पद भान ॥९॥

(अथ नारद-प्रवेशिका-गीतम्--)

हृन्मभवन सजो मुनि चल आएलाह, एहि जग लेल परवेस ।
धोती धवल तिलक शिर राजित, [ता] सभ शोभित केश ॥
अनुपम सुरनि^{३२} गवहि मन भावए, लागि रहल हरि आस ।
हमर सन्देश मुहुति^{३३} कए राखल, पसरल सगर सुवास ३४ ॥
कतेक जतन - मोहि^{३५} सुरति देलहि, थिक अनुपम बहुमुख ।
नारद हँसि हँसि हरि-कर देलहि, पारिजात एक फूल ॥
फूल पावि हरि हृदय लगाओल । मुनि कहि पुछल विचार ॥
कओनहि कर एह फूल हम देअओ, सोरह गहुष हजार ॥
हरिक वचन गुनि, कहल नारद मुनि, मन इए सुनु मोर बात ।
दूर सोहागिन^{३६}, लग छवि रुकुमिनि, देखनु तनिकाहि हाथ ॥
मुनिक वचन गुनि, देल हरि रुकुमिनि, सोचए लागलि छनि मान ।
^{३७} हेमनिरि-कुमरि चरण चरण धरि, श्रीवदत्त कथि भान ॥१०॥

(अथ रुक्मिणीहर्षगीतम्--)

जप तप पुण्य जनम हम कएलहु^{३८}, जतेक पुजल हम गौरी ।
पारिजात हरि हँसि कर देलन्हि, सब परिपुरलि मोरी ॥

२६ - (?) । २७ - कठोर द्वात्र (संघष) । २८ - अग्नि । २९ - सूर्य । ३० - धृति (काल) । ३१ - अग्नि । ३२ - सुगन्धि । ३३ - गुप्त कए । ३४ - सुगन्धि । ३५ - हमरा (नारदके) हमरा करओलनि । ३६ - सोनागवल्ली सखीनामा दूरसे धारि । ३७ - पार्वतीक ।

हिय मोर हरेखें कुड़ाएल हे सखि ! हरि फुल देल मोर हाथ ।
जानल मान बहुत कए अपनी, सोइह सहल गोवि साथ ॥
सब ३० परिहरि हर फुल मोहि देखिन्ह, उपर रहल मोर साथ ।
जीवन जनम मोर भेला सोगारथ कृपा कएल मदुनाथ ॥
आनन्द उर न समाइछ हे सखि ! जानि अपन बहुमान ।
हरि - पदकमल हृदय धरि राखल, शीवदत्त कवि भान ॥११॥

(नारद-प्रस्थान-गीतम् -)

ई देखि तोरित ३१ चलल मुनिराजे । ४० वासव-गरव निवारण काजे ॥
हरिक सोहागिनि जनए निवासे । जेसल जाय सलन तमु पासे ॥
हरपित भेलि मुनि दरसन पाए । कएल प्रणाम धरण चित-हाए ॥
आसन दए लेल चरण पखारि । पिबयक देलनि शीतल ४१ बारि ॥
मुनि हरपित अति आदर जानि । शीवदत्त भन मन अनुमानि ॥१२॥

(अथ नारदं प्रति सत्यभामा-कथित-गीतम्-)

मुनिक समादर कव जत जानि । लागल कहए वचन अनुमानि ॥
लागल आस हपर मन माहि । हरिक कुशल किछु पाबिअ नाहि ॥
तीन भुवन हित जानिअ तोहि । भावव खबरि मुनाबिअ मोहि ॥
नारद कहए लग किछु बानि । शीवदत्त भन मन अनुमानि ॥१३॥

(अथ सत्यभामां प्रति नारद-कथित-गीतम्-)

एखन छलहुं हरिक हम साथे । एकुमिनि सहित चलल ब्रजनाथे ॥
भेल छलहुं हम सुदपति-पासे ४२ । पाओल फुल एक परम सुधासे ४३ ॥
पारिजात थिक नामक फूले । एक-संसार अनूप अमूले ॥
कलावृक्ष भए लेल अवतारे । ४४ वासव कां थिक अधिक विभारे ॥

३६ - सन के छोड़ि । ३९ - शीघ्र । ४० - इन्द्रक गर्वके हटववाक हेतु ।

४१ - जल । ४२ - इन्द्रक लग । ४३ - सुगन्धित । ४४ - इन्द्रके ।

आनि तेहन फुल हरिके भेला । देखवित हरि अति हरपित भेला ॥
बिहुँसि धिहुँसि फुल एकुमिनि देल । एको बेरि अहाँक नाम नहि लेला ॥
दिन-दिन छोट परब एहि रीति । कोन परि वृक्षव हरिक पिरोति ॥
आओत जानि जखन बड़ मोट । बाढ़ल नहि होअ तखनर छोट ॥
मान करब मन अथय अपार । जा धरि गाल लागए नहि द्वार ॥
ई कां नारद कएल नयान । मन गुनि शीवदत्त पद भान ॥१४॥

(अथ सत्यभामा प्रवेशिका-गीतम्-)

मुनि मुनि-वचन परम मन मान । विसरल सकल हरष ओहिदाम ॥
अछरन हाथ बोलथि किछु नाहि । बिरह-पराभव अति मन माहि ॥
फूलल धिपुर ४५ मलिन तन भेला । सत्यभामा देखि लेल परवेस ॥
निज अपमान परम मन मानि । शीवदत्त भन मन अनुमानि ॥१५॥

(अथ सखीं प्रति सत्यभामा-विलाप-गीतम्-)

मुनिक वचन सुनि मन आकुल, दुर गेल गौरव आज ।
एत अपमान सह्य नहि पाबिअ सुमरि सुमरि हरिकाज ॥
आब उचित कोन जीवन हे सखि ! रहल हमर नहि मान ।
मोर मन दड़ भेला पुरुष अपन नहि, से जग के नहि जान ॥
भूषण बसन उतारि नइओल, जानि अपन अपमान ।
गुन गौरव सब भेल अकारव ४६, अब हम तेजब परान ॥
सुनहु वचन सखि ! अविधि [यदि] हरि, एकुमिनि-पति-ब्रजराज ।
टटल मिनेहु तेहु जत लाओल, दुर गेल दुरपति आज ॥
४७ कलाह विगारद नारद हे सखि ! अयनहि बुझ परमान ।
हेमनिरि-कूमरि चरण धरि, शीवदत्त पद भान ॥१६॥

[अथ सत्यभामा-संगोपे श्रीकृष्णामन-गीतम्-]

नारद कलाह-विगारद थिक ई, सेहो मन नहि अवधारी ।
ति तोरित हरि आए तुलाएल, करदत धनिक पुछारी ॥

४५ - फूल । ४६ - अवयव । ४७ - अगड़ा समर्थता से निपुण ।

कहेहु वचन सखि ! कतए आएल छथि, थिक थिक हकुमिनि-नाथ^{४८} ।
परम कलेस भेल धनि अएलन्हि वाहि वसन^{४९} निअ माथ ॥
आकुलि बिरहु बेआकुलि भेलो, सखिनभे^{५०} बात जनाव ।
बोख सानि जनि तोर लगाओल हरिक वचन सुनि पाव ॥
हरिक वचन सुनि भेलिह वैमुधि घनि, बैसि रहल मुल केरि ।
ई याचक दाता मुख हेरहु, हरखि हरखि एक बेरि ॥
गिरि तह^{५१} गरुअ मान कर भाबिनि, बस एक हरि रस जान ।
हरिवद कमल हृदय धरि राखिअ, शीवदत्त पद भान ॥१५॥

[अथ मानिनी प्रति हरि-कथित-दोहा-]

जओ किछ भेल अपराध घनि, मानिनि छेमहु मोर ।
एतेक उचित नाह मान तोहि, गिरि तह अधिक कठोर ॥१॥

[अथ मानिनी-कथित-दोहा-]

एहि सभ^{५२} कहने शक नहि, हृदय जरल अछि मोर ।
पहिने हृदय सताय कहूँ, आन कर छथि सोर ॥२॥

[अथ दूती प्रति हरि-कथित-दोहा-]

धनि मानिनि अति जानि कहूँ, हरि लेल दूति बजाए ।
मन मँह प्रेम बढ़ाए कहूँ दूती ! देहु मनाए ॥३॥

[अथ मानिनी प्रति दूती-कथित-दोहा-]

तोहि मनाओन हे सखि ! आए मदन - गोपाल ।
बेवै सरतन^{५३} मदन के भले लड़े हए लाल ॥४॥

४८—ओ हविमणीक पति बिकाह, हमर नहि । ४९—वस्त्र सँ । 'बान्ह रनि' मूलपाठ । ५०—'सखि तित बात जेनाथ'—मूलपाठ । ५१—पहाड़ सग जारी । ५२—'सब थुक हम शक'—मूलपाठ । ५३—कामदेवक ।

मुख देखन के लालसा, व्याकुल फिरत गोपाल ।
कनक^{५४} रङ्ग को जानि के करे अधर धरि लाल ॥५॥
मोहे मन सब सखिन के, फिरत फिरे बन माँह ।
सो हरि आज मुख मिलन को, आए सखिन के बाह ॥६॥
पुर्यो सखी^{५५} पर अपर शशि, उगे दुहु एक ठाम ।
^{५६}मध सशि फूले कमल-पुग, देखहु कमल से श्याम गजा

(अथ मानिनी-कथित-दोहा--)

हमर मिलन चाहत नहि, निशि-बासर नहि चैन ।
^{५७}श्याम रङ्ग को जानि के, श्याम करे निज नैन । ६॥
वचन मधुर अति श्यामके ^{५८}अन्तर कपट निदान ।
प्रीतिकरी जग जानि कहूँ, जे सभ दिन सविमान^{५९} ॥७॥
हरिक सोहानिनि जगज सरि, नाम हमर भेल सोर ।
हैसन सखीमन जानि कहूँ एहन करम मोर भोर^{६०} ॥८॥

(अथ मानिनी-कथित दूती प्रति विलाप-गीतम्)

गुण-गौरव सखि ! मोर दुरि गेल । हरि हंसि फल हकुमिनि के देल ॥
हे सखि ! रहल हमर नहि मान । नेह करइत हो परम मलान^{६१} ॥
पुख नेह जत कहइत लाजे । आव सखी ! हम अएलहुँ बाजे ॥
मन गुनि शीवदत्त पद भान । रसिक गोपाल सभए रस जान ॥९॥

(अथ मानिनी प्रति दूती-कथित-गीतम्)

मान कला धरि बैसलि सुन्दरि, मोह-मगन भेल मदन-मुरारी ।
जनहि रिखावधि धेनु बजावधि, विकल भेल गिरिधारी ॥

५४—सोनाक रंग के लक्ष्यक वर्ण वृत्ति । ५५—पूर्वजन्म पर दोसर जन्म (कृष्ण) ।
५६—दुनु चन्द्रक बीच में कमल (रतन) । ५७—कृष्णक वर्ण के श्याम जानि । ५८—
'सोत' । ५९—अवमान करैत । ६०—मन । ६१—पुख ।

चरण कमल सन, अति छवि भूषण, मुख छप चान समान ।
नयन सरोज^{१२}, अधर फुल मधुरी, भ्रुकुटी कुटिल कमान ॥
^{१३}मदन वेवल सन, किछु न भाव्य मन, फिरन फिरए वजराज ।
बिधिवस, दिन दस धीवन धन सखि ! न कर विमुख मन आज ॥
मुख चिनु हरि निशि वसि गमाओल, बहल वैशाकुल काम ।
हृदय कठोर ओर धए राखिए, कओन उचित परिनाम ॥
चानक जोति जगत सभ जानत जे निरमल छवि तोर ।
हृदय कठोर देख तुह सुन्दरि, जे तहि तोहर इकोर ॥
काज न आओत मोरव हेसखि ! आव उचित नहि मान ।
हरिपद कमल हृदय धय राखल, शिवदत्त पद गहो जान ॥११॥

(अथ मानिनी प्रति दूती-कथित-कवित्तमाह—)

जाए कहै दुति^{१४} मानिनि सौं, अलि ! आए खड़े हैं कुमर कन्हारै ।
मन ही कछु सोचत हूं मनमोहन, मैं अब तोहि मनाओन आई ।
आप न आए सके हरि जू, इस कारण दूती मोहि पठाई ।
जाए मिलौ हरि सौं अब हो, रहए सगरे तुम्हरी चतुराई ॥१॥

(अथ मानिनी-कथित-कवित्तम्—)

सुकुमिनि के न मनावत हैं सखि ! प्रीति नई उनकी मनकी है ।
तुं क्यों बात बनावत है, उन सौं हमको पगरीट करी है ॥
बिस मारि बुझा[वत है] हमको, जिहि कारण ते सुख की चटकी है ।
कहए कछु अओ कछु अओरन की, [सखि !] जौन कहै उनकी मनकी है ॥२॥

[अथ मानिनी प्रति दूती-कथित-कवित्तम्]

क्यों तोहि जानि पड़े मन में, सखि ! बैठि रहौ अपनी गृह जाई ।

उनकी कछु बात सोहात नहीं, मोहि तू क्यों बात बनाओन आई ।
कह कै तुम आगि लगावत पानि में, एही बनी तेहरी चतुराई ॥३॥

[श्रीकृष्ण प्रति दूती-कथित-कवित्तम्—]

मालति नाहि मनावत है कत, की जग मे रिति नई भई है ॥
उनते कछु उत्तर देन नहीं, हम ही जग मे बदनेस^{१५} भई है ॥
हरि ! बात जनावत आपे न क्यों, अब जाइ मनाइ [उपाय करी] है ।
दूती के बात सुने मनमोहन, आपहि खड़े मदुराइ [हरी] है ॥४॥

(अथ मानिनी प्रति हरि-कथित-कवित्तम्—)

काहे को मान बनावत सुन्दरि ! क्या तोहरे मन कपट भरी है ।
दोपन कौन से मोर पड़ी, अलि ! सो नहि सो ही जानि परी है ॥
क्या तोहि रोस भई मन सुन्दरि ! नैन तिहारो जोग नई है ।
योगिनि नारि निहारि तहीं, हमरे दिल से कुछ सोच भई है ॥५॥

(अथ मानिनी-कथित-कवित्तम्—)

काहे को बात सुनावत हौं अलि ! मैं अपने [हिय] दुःख मरी है ।
बात तेहारो सोहात नहीं मोहि मेरे दिल बिच रोस भरी है ॥
काहे को सोचत हौं मनमोहन, जाहु तहाँ जहाँ प्रीति नई है ।
जाहुजि जाहुजि जाहु, चला, अब खोद जो तालन शोर भई है ॥६॥

(अथ श्रीकृष्ण-कथित-कवित्तम्—)

काहे को चोर उपेखि नड़ाउति, काहे को भूषण भार भई है ।
जानन क्यों तुम फेरि रही, इस कारण दिल बिच सोच भई है ॥
बात कछु न सुने हरिके, इह मानिनि केवल मानमई है ।
बोलहु बोल कहै निशि-वासर, प्यारी से ना गमरी तो भई है ॥७॥

(अथ मानगीतम्—)

हरि वेमुखि देखि कलावति रे, सम्मुखि नहि होइ ।
भूषण वसन उतारल रे, फेकल सभ कोइ ॥

कोटि कला हरि लावधि रे, नहि बोलए बानी ।
गिरिवत मान धएल धनि रे नहि हेरए समानी ॥
देखल वदन मलिन कए रे, मने ज्ञान हरि लेत ।
छन-छन मन आकुल हो रे, सएन बएन नहि देत ॥
परसन धनि कए अपन मन रे, परितेजिअ माने ।
हरिपद कमल हृदय धरि रे, कवि शिवदत्त भाने ॥२०॥

(अथ मानिनी-कथित-गीतम्—)

जत जत हुनि हरि भाषल रे, राखल एकओ नहि धीर ।
जो^{६६} मोहि बुझि^{६७} अवधारय रे, ^{६८}सारथ नहि हरि-गौर ॥
मन दए हमर वचर सखि रे, हरि [फाँ] कहिअ बुझाय ।
पारिजात तस आनधि रे, देखु मोहि द्वार लगाय ॥
सब परिहरि जो^{६९} हरि मोर रे, वचन सुनधि जो^{७०} कान ।
मन मोह कएल कठिन प्रण^{७१} रे, से जो^{७२} राखवि मान ॥
से परिपूरधि मोर हरि रे, परितेजिअ [हमे] मान ।
... ..
शिवदत्त भन मन दए रे, छोड़िअ कपट पट आज ।
^{७३}चाँकहि नयन निहारलि रे, मन बएन कएल बजराल ॥२१॥

(अथ मानिनी प्रति श्रीकृष्णकथित-गीतम्—)

एक जुल लए धनि रुसलि रे, मन कएल पयान^{७४} ।
^{७५}जानिनि आए निराइलि रे अब होएत विहान^{७६} ॥
भ्रूण वसन समारिअ रे, देखि नयन जुड़ाए ।
आनब माछ फूलक हम रे, देव द्वार लगाए ॥
परसन कएल वदन धनि रे, हेरु नयन उधेरि ।
बदन बसने^{७७} अग्नित कए रे, बोललि मुख मोरि ॥

६६ - अपवार्थ (कृति) । ६७ - सार्थ । हरिक वचन अर्थयुक्त नहि । ६८ - कठिन प्रतिजा । ६९ - कटाक्ष । ७० - पाथर । ७१ - राति आधि समाप्त भेलि । ७२ - प्रात । ७३ - वस्त्र युक्त मुँह को मुकाए ।

बएन बएन मुनि मन भेल रे मन पूरव तोरि ।
... .. ॥
लुबुधल रसे^{७८} रसिक-जन रे रसमय रस जाने ।
हरि पद कमल हृदय धरि रे शिवदत्त पद भाने ॥२२॥

(अथ श्रीकृष्णकथितं नारदं प्रति गीतम्)

अनुमति कए दूढ़^{७९} दित मन रे लेल मुनिहि बजाए ।
इन्द्रक भवन सिधारिअ रे सभ कहिअ बनाए ॥
पारिजात तोरित आनिअ रे मोहि एए हनु लाए ।
जाहि कारण धनि रुसलि रे देव द्वार लगाए ॥
इन्द्रक सभा तुलाएल रे मुनि नारद आजे ।
शिवदत्त भन मन दए रे देखल सुरराजे^{८०} ॥२३॥

(अथ ^{८१}सखी प्रति सत्यभामा-कथित-गीतम्—)

जनम ^{८२}सोगारय ओ ओ रे, भेल मोरि,
राखल गौरव मोर हरि ॥
के अछि एहनि ओ ओ रे, कहव फाहि
एहन हरष भेल रह जाहि ॥
सुरपुर ^{८३}सौं द्रुम ओ ओ रे लाओल
से मोर द्वार लगाओल ॥
श्यामसुन्दर मन ओ ओ रे भाओल
लौचन-गुगल जुड़ाओल ॥
चान समान एहो रे हरिमुख
बैलइते उपजल मन मुख ॥

७४ - स्थिर दित । ७५ - इन्द्र । ७६ - प्रसङ्गानुसार एहि से पूर्व इन्द्रक उक्ति नारदक प्रस्थान कृष्णक संग्रामार्थ प्रस्थान आविक उन्वयात् उचित । प्रायः लेखक प्रमादात् तीन चारि गीत छुटि गेल । गीत सं०—२४ तथा २५ अग्रिम तीन गीतक बार रहय से उचित । ७७ - जन्म लेवाक मुण । ७८ - स्वर्ण से माछ लाओल ।

कमल-नयन हरि ओ ओ रे देखल

[कोटि हृदय-सुख लेखल] ॥

शिवदत्त कवि ओ ओ रे पद भन

“मनमथ उपगत भेल तन ॥१४॥

अपि च—

भेल सखि ! परम सुदिन दिन आजै । देखल पारिजात तहराजै ॥

शोक कलपतरु हुनके नाम । तोरित मनक परिपूरल काम ॥

... .. ॥

... .. ॥१५॥

(अथ जयशत-प्रवेश-गीतम्—)

रख छड़ि आएल कुमर जयन्ते^{६०} । कृष्ण-नयन^{६१} मनमथ बलवन्ते ॥

भारो युद्ध पड़ल ओहिठामे । देखि देखि हरषित वासव-रामे^{६२} ॥

बुढ़ बल देव दरोबरि देल । ककरो सँ भङ्ग समर नहि भेल ॥

भाइ भाइ रण भेल भयान । लड़ए ऐरावत गरुड़ निदान ॥

“वासव सँ यदि भिड़ए गोपाल । डोलए महि काँपए दिगपाल ॥

शिवदत्त भन सुमरि भवानि । हमर मनोरथ पूरहु आनि ॥१६॥

(अथ इन्द्र-कृष्ण-संग्राम-गीतम्—)

“ऐरावत-पिठ सुरपति सजनि मे खगपति-पिठ चकुमनि-पति ।

पाथर वज्र अस्त्र कर सजनि मे संग शोभय नव जलधार ।

अस्त्र गदा कर श्यामक सजनि मे निरखत अति अभिमान ।

शिवदत्त एही पद भान सजनि मे रसमय पे रस जान ॥१७॥

७६—कामवेश उपरिष्ठत भेल ।

८०—इन्द्रक पुत्र जयन्त । ८१—कृष्णक पुत्र कामवेश । ८२—इन्द्र ओ कृष्ण । ८३—

द्वन्द्व सँ । ८४—एहि गीतक पाठ इतस्ततः भए गेल अछि ।

(अथ तयोः संग्राम-गीतम्—)

सजि आएल दल [गर्वित] सुरपति, संग पयोधर^{६५} जाल ।

कए मन कोप चलल हरि यावत, काँपए वस दिगपाल ॥

सुरपति उर हेरि हरि मन भाओल, अस्त्र गदा कर साज ।

कोप भरिय भरि चलल पुरन्दर^{६६}, हुम्बुभि^{६७} बुढ़ दिशि बाज ॥

मदन-मुरारि विचारि समारल, फेकल मन अनुमानि ।

जाव गदा उर लागल सुरपति, [सभकाँ] मारल हानि ॥

पारिजात एक माछ उपाइल, अपनहि फुलवन जाए ।

जहि कारण धनि रुसलि छलिहे, से देख द्वार लयाए ॥

परसनि [भए] करि [हेर] आवे धनि, आव लचित नहि मान ।

पारिजात तरु द्वार निहारिअ, न करिअ हृदय पपान^{६८} ॥

अवगुन परिहरि हरणि निहारल, तेजल मानिनि मान ।

हरिपद कमल हृदय धरि राखल, शिवदत्त पद भान ॥१८॥

(अथ मानभङ्ग-गीतम्—)

“विमुखि ! सुमुखि भए, सदाय हृदय कय, बाँके नयन हरि हेरि ।

कीदहु^{६९} रङ्कु^{७०} परसमनि पाओल, विहुँसि हँसलि मुख मोरि ॥

आए अघर पर छुटल चिकुर^{७१} लट, मनमथ^{७२} हरि मन जाग ।

नागरि एहन सन जनि शशि^{७३} ऊपर, पियए अभिअ-रस^{७४} नाग ॥

मानवती संग रसिक शिरोमणि, कएल अघर मधुपान ।

मन अवधारि जानि गुनगौरव, करिअ आलिङ्गन दान ॥

कनक-लता सनि नागरि निरखति, [निरखत] नन्दकुमार ।

शिवदत्त कवि गाओल [मन दए], पसरल प्रेम पसार ॥१९॥

इति श्रीशिवदत्तकृतं पारिजात-नाटकं

समाप्तम् ॥

६५—मेघक तमूह । ६६—इन्द्र । ६७—रणवाह । ६८—पाथर ।

६९—विगड़लि सँ प्रसन्ना भए । ७०—वरिष्ठ जेना रघुसमनि पवि गेल हो ।

७१—कोश । ७२—कामवेश । ७३—चन्द्रकवी नायिकाक मुँह पर ।

७४—नागकरी कृष्ण अमृत पी गिह ॥